



सहायक वाचन

कक्षा 4

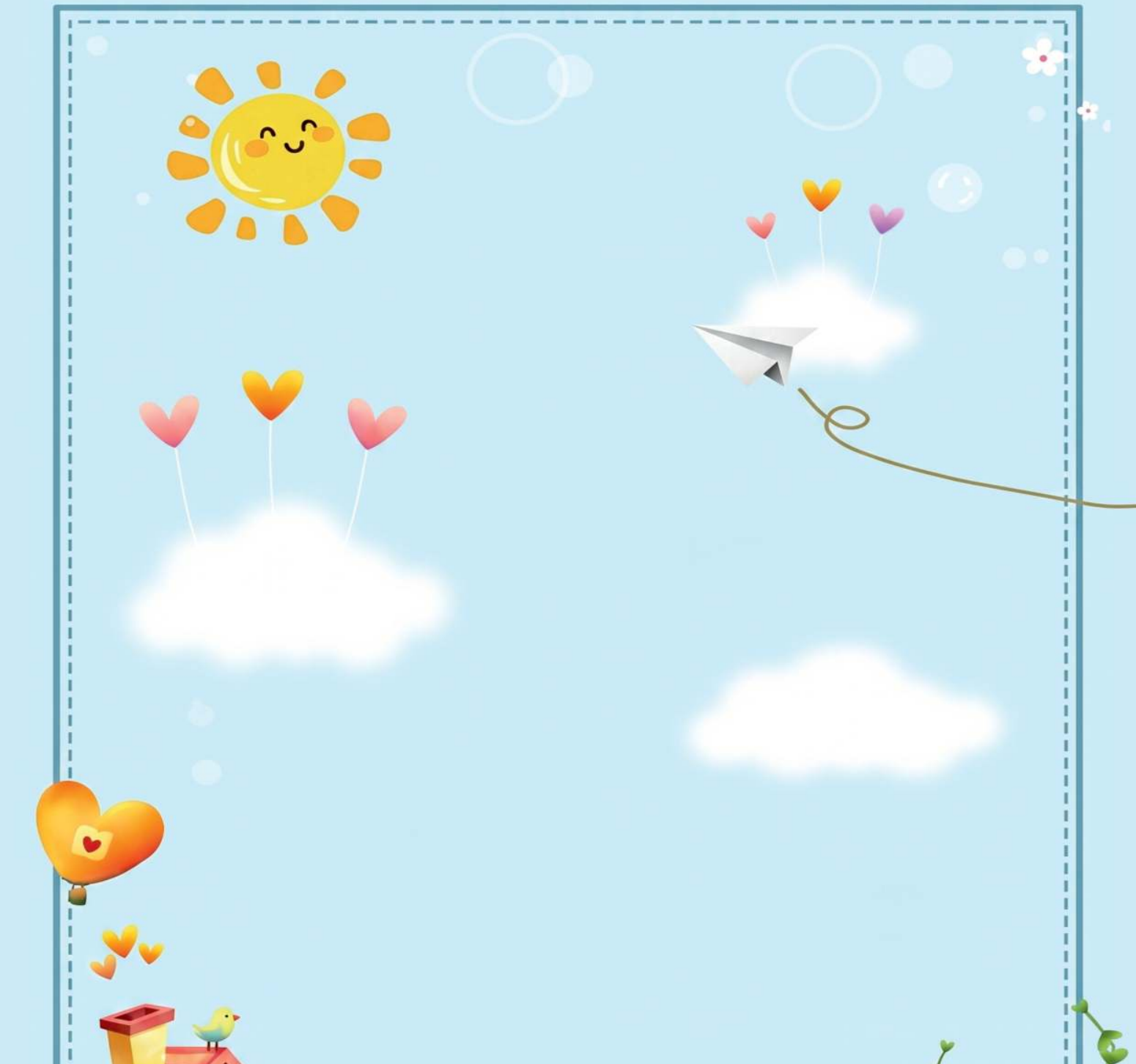
सत्र: 2026-27



राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

यह पाठ्यपुस्तक शासकीय संपत्ति है। इसका क्रय-विक्रय अवैधानिक है।

निःशुल्क वितरण हेतु



कैयूमी प्रिंटिंग प्रेस, रायपुर (छ.ग.)

“छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम” द्वारा प्रदायित आंतरिक पृष्ठ 70 जीएसएम वॉटरमार्कड रील मैपलिथो पेपर कॉनफॉर्मिंग टू बीआईएस स्पेशीफिकेशन 1848 (पार्ट-1) : 2018 विथ लेटेस्ट अमेडमेंट, इन साईज 84 सेमी विड्थ रील तथा कव्हर पृष्ठ 220 जीएसएम एमजी कव्हर पेपर कॉनफॉर्मिंग टू बीआईएस स्पेशीफिकेशन आईएस 6956:2001 (रिफर्मड 2017) विथ वन साईड ग्लेज्ड (शाईन) एंड लेटेस्ट अमेडमेंट्स इन शीट साईज 61cm x 86.5cm पर मुद्रित किया गया है।

मुद्रित पुस्तकों की संख्या : 4,40,041





प्रेरणास्रोत
डॉ. कमलप्रीत सिंह (भा.प्र.से.)
सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़

मार्गदर्शक
ऋतुराज रघुवंशी (भा.प्र.से.)

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छ.ग., रायपुर

सलाहकार

जे.पी. रथ
अतिरिक्त संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद् छ.ग., रायपुर

के. कुमार
संयुक्त संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद् छ.ग., रायपुर

समन्वयक
कौस्तभ चटर्जी (सहायक संचालक)
डॉ.डी.के.बोदले (से.नि.सहायक प्राध्यापक)

विषयवस्तु चयन तथा संपादन
डॉ. चितरंजन कर, श्री बलदाऊ राम साहू

विषय विशेषज्ञ
श्री जीवन लाल चंद्राकर, श्री ठाकुर राम कुर्रे, श्री नरेंद्र जांगड़े

लेखन समूह
श्री विनय शरण सिंह, श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव, श्री सीताराम साहू,
श्री पोखन लाल जायसवाल, श्री द्रोण साहू, श्रीमती मल्लिका रुद्रा,
श्रीमती प्रिया जोशी, श्रीमती रजनी शर्मा

टंकण
श्री शिव सोनी, श्रीमती मीनाक्षी मिश्रा

आवरण, पृष्ठांकन एवं लेआउट डिजाईन
हिमांशु वर्मा, सुधीर कुमार वैष्णव

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

आमुख

छत्तीसगढ़ स्कूली शिक्षा में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की पुस्तकों को अनुकूलित कर बच्चों को राष्ट्रीय स्तर के समतुल्य लाने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि राज्य के बच्चे किसी भी स्तर पर कमतर न रहें। साथ ही वे राज्य के पर्व-परंपराओं और कला-संस्कृति से भी परिचित हो सकें। इस उद्देश्य से छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग ने कक्षा 3 से 8 तक के विद्यार्थियों के लिए सहायक-वाचन निर्माण करने का निर्णय लिया है। इस पुस्तक के माध्यम से वाचन के प्रमुख उद्देश्य, जैसे- पठन में रुचि का विकास, अर्थ ग्रहण करने की क्षमता, अभिव्यक्ति कौशल का संवर्धन, कल्पनाशीलता एवं चिंतन शक्ति का विकास करना है, जिससे बच्चे स्वतः स्फूर्त पठन एवं वाचन की ओर प्रेरित हों सकें और उनमें स्वतंत्र रूप से सीखने की प्रवृत्ति विकसित हो सके।

यह पुस्तक पाठ्यपुस्तक से इतर है। इस पुस्तक में रोचक कहानियों, कविताओं एवं महापुरुषों की जीवनियों के साथ साथ स्थानीय इतिहास, कला-संस्कृति, तीज-त्यौहार, पर्व-परंपराओं आदि की जानकारी दी गई है। प्रायः ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पढ़ने के लिए पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध नहीं होती, इस कारण वे बहुत-सी जरूरी जानकारियाँ प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं।

आज शिक्षा के परिदृश्य में आमूल-चूल परिवर्तन आया है। अब बच्चे स्थानीय न होकर वैश्विक हो गए हैं। ज्ञान बढ़ा है तो प्रतिस्पर्धा भी बढ़ी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बाल-केंद्रित शिक्षा, अनुभव आधारित शिक्षा एवं समृद्ध भाषाई शिक्षा पर विशेष बल देती है। इसलिए इस पुस्तक को तैयार करने में बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाया गया है, ताकि बच्चे केवल पढ़ना ही न सीखें, बल्कि पढ़कर समझें, सोचें और तथ्यों को अपने अनुभवों से जोड़ सकें।

हम जानते हैं कि भारत का अपना गौरवशाली और समृद्ध इतिहास रहा है। इस समृद्ध इतिहास के साथ-साथ वे राज्य के स्थानीय कला-संस्कृति, इतिहास और लोक-जीवन को जानें और उस पर गर्व कर सकें। यह इस पुस्तक का व्यापक उद्देश्य है।

यह पुस्तक प्रायोगिक संस्करण के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। इस संदर्भ में विद्यार्थियों, शिक्षकों, पालकों एवं शिक्षाविदों से विनम्र अपेक्षा है कि वे हमें अपने बहुमूल्य सुझाव प्रदान करें, ताकि आगामी समय में इस पुस्तक को और अधिक उपयोगी, प्रभावी एवं छात्र केंद्रित बनाया जा सके।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक शिक्षकों के लिए शिक्षण को अधिक प्रभावी एवं रोचक बनाने में उपयोगी सिद्ध होगी तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए पुस्तक निर्माण से जुड़े सभी शिक्षाविदों, विशेषज्ञों, लेखकों एवं सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूँ।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण,
रायपुर छत्तीसगढ़



शिक्षकों के लिए निर्देश

छत्तीसगढ़ शासन की विशिष्ट सोच के अनुरूप कक्षा तीसरी से आठवीं तक के विद्यार्थियों के लिए सहायक वाचन पुस्तक का निर्माण राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के द्वारा किया गया है। इस पुस्तक का उद्देश्य विद्यार्थियों में पठन के प्रति रुचि विकसित करना, स्वतः स्फूर्त वाचन की आदत डालना तथा उनकी भाषा, चिंतन क्षमता का विकास करना तथा छत्तीसगढ़ के सामाजिक परिवेश से परिचित कराना है। अतः राज्य के विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे शासन की मंशा के अनुरूप सहायक वाचन पुस्तक के प्रभावी उपयोग से बच्चों में अपेक्षित दक्षताओं का विकास के लिए आनंदमय वातावरण निर्मित करें।

शिक्षकों से निम्नलिखित बिंदुओं के अनुसार शिक्षण कार्य करने की अपेक्षा की जाती है—

1. सहायक वाचन को परीक्षा की दृष्टिकोण से प्रस्तुत न करें। बल्कि कक्षा में सहज, रोचक एवं सहभागितापूर्ण वातावरण बनाएँ, ताकि बच्चे इसे उत्साहपूर्वक पढ़ने के लिए तैयार रहे।

2. विद्यार्थियों को स्वयं पढ़ने, समझने एवं अपने शब्दों में अभिव्यक्त करने का अवसर दें।

3. बच्चों से क्रमशः सस्वर वाचन, समूह वाचन तथा मौन वाचन करवाएँ, जिससे स्पष्ट उच्चारण एवं अर्थग्रहण की क्षमता का विकास हो सके।

4. पाठों को बच्चों के परिवेश, स्थानीय संस्कृति, तीज-त्यौहार एवं दैनिक जीवन से जोड़कर समझाएँ, ताकि वे विषयवस्तु को सहज रूप से आत्मसात कर सकें। छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति, महापुरुषों, ऐतिहासिक स्थलों और जैव-विविधता पर चर्चा कर समझ विकसित करें। यदि पाठ किसी विशेष जिले या त्यौहार (जैसे: हरेली, तीजा) पर आधारित है, तो बच्चों को उनके व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

5. पाठ पढ़ाने के बाद बच्चों से प्रश्न पूछें, उनके विचार सुनें तथा चर्चा कराएँ। इससे उनमें आत्मविश्वास एवं अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा।

6. कक्षा में कहानी कथन, चित्रांकन, भूमिका निर्वहन, कविता वाचन, समूह चर्चा



एवं लेखन जैसी गतिविधियों के माध्यम से सीखने को रोचक बनाएँ।

7. पाठों में निहित मानवीय संवेदनाओं, नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक सरोकारों को बच्चों के जीवन से जोड़कर समझाएँ।

8. बच्चों को नियमित रूप से पुस्तक पढ़ने हेतु अतिरिक्त पठन सामग्री के उपयोग के लिए प्रेरित करें।

9. कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी को पढ़ने एवं बोलने का अवसर दें। धीमी गति से सीखने वाले एवं संकोची बच्चों पर विशेष ध्यान दें।

10. महापुरुषों या लोक कथाओं पर आधारित पाठों का कक्षा में मंचन करवाएँ।

11. बच्चों को छत्तीसगढ़ के पारंपरिक खान-पान, खेलकूद, आभूषण, तीज-त्योहार या औजारों के बारे में जानकारी एकत्र करने हेतु प्रोजेक्ट कार्य दें।

13. सहायक वाचन का मूल्यांकन पारंपरिक रटने वाली पद्धति से नहीं होना चाहिए। बल्कि मूल्यांकन के लिए खुले प्रश्न पूछें, जैसे: "यदि आप उस जगह होते तो क्या करते?" या "आपको इस कहानी का कौन सा पात्र सबसे अच्छा लगा और क्यों?" आदि।

टीप- यह पुस्तक एक प्रायोगिक संस्करण है। अतः शिक्षकगण अपने अनुभव एवं सुझाव साझा करें, ताकि भविष्य में पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाया जा सके।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण,
रायपुर छत्तीसगढ़





राज्य शिक्षा स्थायी समिति, छत्तीसगढ़

नाम	पद नाम
1. श्री आलोक चक्रवाल, कुलपति, गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर	- अध्यक्ष
2. संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर	- सदस्य सचिव
3. संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, छत्तीसगढ़	- सदस्य
4. मिशन संचालक, समग्र शिक्षा, रायपुर, छत्तीसगढ़	- सदस्य
5. डॉ. वासुदेव साहसी, सहा.प्रा., शा.जे. योगानंदम छ.ग. महाविद्यालय, रायपुर	- सदस्य
6. डॉ. सुभाष चन्द्राकर, प्राध्या., दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर	- सदस्य
7. श्री मनीष देवांगन, वि.स्व. शिक्षा अधिकारी, कार्या. धरसीवा, जिला-रायपुर	- सदस्य
8. श्री नरेन्द्र सिंह राजपूत, सहा. शिक्षक, प्राथ. विद्या. सिवनी, खुर्द (बोडला), जिला-कबीरधाम	- सदस्य
9. श्री मनोज सिंह, शा. शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर	- सदस्य
10. श्री दिलीप केसरवानी, पूर्व प्राचार्य, कबीर नगर, रायपुर	- सदस्य





अनुक्रमणिका

पाठ सामग्री

पृष्ठ क्रमांक

1. उन्हें नमन है (कविता)	त्रिलोक सिंह ठकुरेला	1
2. श्री राम की आज्ञाकारिता	लेखक मंडल	2
3. सैनिकों का एक गाँव 'पैरी' (आलेख).....	लेखक मंडल	4
4. मुझे बढ़ने दो (चित्र कथा)	लेखक मंडल	6
5. तिनका- तिनका जोड़ना पड़ेगा (लोककथा).....	लेखक मंडल	7
6. भारतीय वेशभूषा (आलेख)	लेखक मंडल	9
7. पढ़ने दे (कविता).....	लेखक मंडल	11
8. लक्ष्यभेद	लेखक मंडल	12
9. पोला - त्योहार (आलेख)	लेखक मंडल	14
10. ठाकुर प्यारेलाल (जीवनी)	लेखक मंडल	16
11. हँसते-हँसते चलना राही (कविता)	लेखक मंडल	18
12. लोकवाद्य : मोहरी (आलेख)	लेखक मंडल	19
13. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी - हीरालाल सोनबोडर (जीवनी)	लेखक मंडल	21
14. कोयल रानी (कविता).....	लेखक मंडल	23
15. हार न मानना ही जिंदगी है (प्रेरक प्रसंग)	लेखक मंडल	24
नोट्स		25



उन्हें नमन है

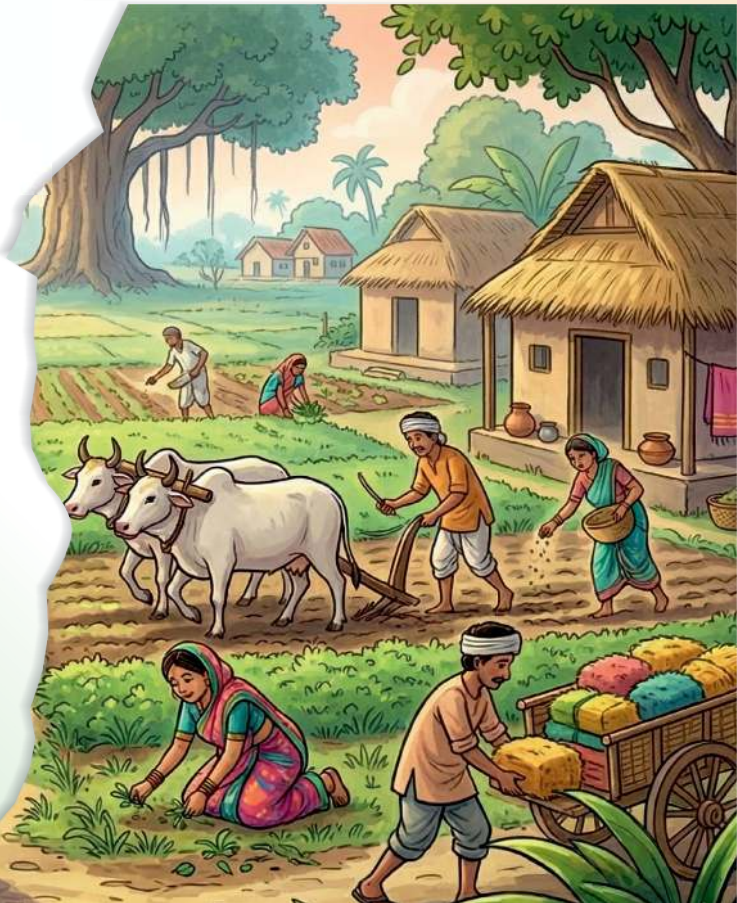


स्वार्थ-भाव से ऊपर उठकर,
जो जगहित को ध्येय बनाते।
उन्हें नमन है, जो निज श्रम से,
औरों का जीवन महकाते।।

आशाओं के दीप जलाकर,
जो जग को जगमग कर देते।
उन्हें नमन है, जो सुख देकर,
जन-मन की कुंठा हर लेते ।।

धूप-मेह-सर्दी सहकर भी,
सकल लोक हित अन्न उगाते।
उन्हें नमन है, जिनके श्रम से
सभी उदर-भर भोजन पाते।।

जिन्हें राष्ट्र सबसे प्यारा है,
राष्ट्र हेतु जो सदा समर्पित ।
उन्हें नमन है, राष्ट्र-यज्ञ में
जो सब कुछ कर देते अर्पित।।
सभी उदर-भर भोजन पाते।।



श्री राम की आज्ञाकारिता

अयोध्या नगरी में राजा दशरथ राज्य करते थे। उनके चार पुत्र थे—राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न। चारों भाइयों में बड़ा प्रेम था। श्रीराम सबसे बड़े थे। वे अत्यंत विनम्र, सरल, शूरवीर और आज्ञाकारी थे। अयोध्या की प्रजा भी उनसे बहुत प्रेम करती थी। सभी चाहते थे कि श्रीराम ही अयोध्या के राजा बनें।

जब श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारी चल रही थी, तभी एक अप्रत्याशित घटना घट गई। महारानी कैकेयी ने राजा दशरथ से अपने दो वचन मांग लिए। पहले वचन में उन्होंने अपने बेटे भरत के लिए राजा की गद्दी माँगी और दूसरे वचन में श्री राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास।



राजा दशरथ यह सुनकर अत्यंत दुखी हो गए। वे श्रीराम से बहुत प्रेम करते थे। वे चाहते थे कि राम अयोध्या के राजा बनें, परंतु वे अपने वचन से बंधे थे। वे असहाय होकर मौन बैठे रहे।

जब श्रीराम को यह बात पता चली, तब उन्होंने बिना किसी विरोध के पिता की आज्ञा स्वीकार कर ली। उन्होंने कहा—

“पिता का वचन मेरे लिए सबसे बड़ा धर्म है। मैं प्रसन्नतापूर्वक वन जाऊँगा।”

श्रीराम के चेहरे पर न क्रोध था, न दुख और न ही किसी प्रकार की शिकायत। वे जानते थे कि माता-पिता की आज्ञा का पालन करना ही सच्चे पुत्र का कर्तव्य होता है। उनके इस व्यवहार से सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए।



माता कौशल्या और अयोध्यावासी अत्यंत दुखी थे। वे श्रीराम को वन जाने से रोकना चाहते थे, किंतु श्रीराम ने सभी को समझाया कि हमें सदैव अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए। पिता के वचन की रक्षा करना ही उनका धर्म था।

श्रीराम के साथ माता सीता और भाई लक्ष्मण भी वन जाने को तैयार हो गए। तीनों साधारण वेश में अयोध्या से निकल पड़े। अयोध्या की प्रजा रोती हुई उनके पीछे-पीछे चलने लगी। उस समय श्रीराम ने सबको धैर्य रखने और धर्म के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी।

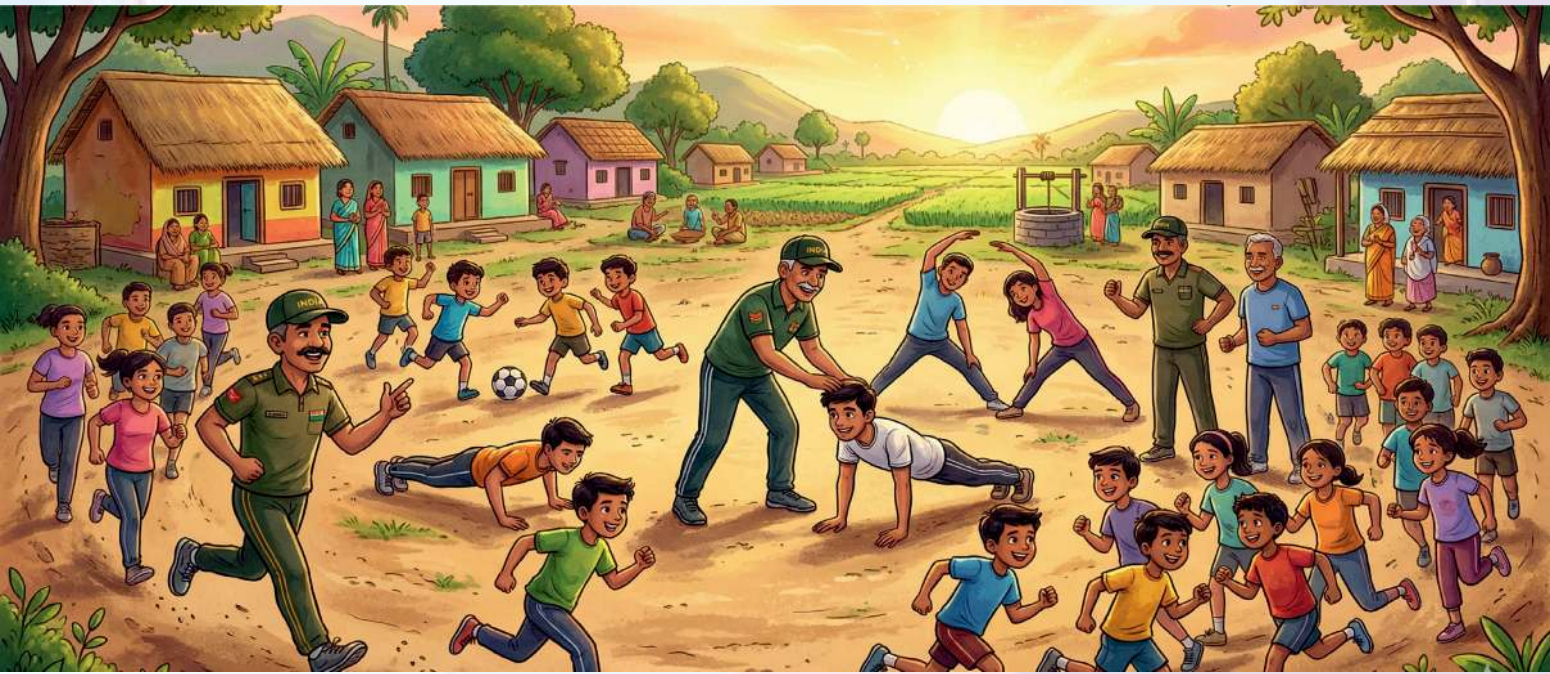
वनवास के चौदह वर्षों में श्रीराम ने अनेक कठिनाइयों का सामना किया, परंतु उन्होंने कभी अपने पिता की आज्ञा पर प्रश्न नहीं उठाया। उन्होंने सदैव सत्य, धैर्य और कर्तव्य का पालन किया। यही कारण है कि श्रीराम को “मर्यादा पुरुषोत्तम” कहा जाता है।

सैनिकों का एक गाँव-पैरी

“जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से बढ़कर होती है”। यह कथन मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम को व्यक्त करता है। इसी भाव में डूबा पैरी गाँव, जहाँ प्रदेश व देश की सुरक्षा में 70 से ज़्यादा सैनिक सेवा दे रहे हैं, जिनमें 6 युवतियाँ भी हैं।

दुर्ग से 40 किलोमीटर दूर बालोद मुख्य मार्ग पर बसा ग्राम पैरी ज़िले का सैनिक-ग्राम बन गया है। 3000 की जनसंख्या वाले इस गाँव में प्रतिवर्ष एक-दो युवक-युवतियों का चयन आंतरिक सुरक्षा और सीमा-सुरक्षा-बलों में हो जाता है, इसके लिए युवाओं में गज़ब का जज़्बा दिखाई देता है। सेवानिवृत्ति के बाद उत्साही एवं ऊर्जावान फौजियों द्वारा गाँव के युवाओं को रोज़ सुबह मैदान में दौड़, खेलकूद एवं अन्य अभ्यास कराते हैं जिसे देखकर मन में देशभक्ति की भावना उमड़ जाती है।

यहाँ के छात्रों से प्रश्न करने पर कि वे क्या बनना चाहते हैं, तब अधिकतर छात्रों का एक ही उत्तर होता है, “मैं सैनिक बनना चाहता हूँ”। गाँव के युवाओं की बहादुरी और सेना में भागीदारी को देखते हुए 2016 में ग्रामीणों द्वारा





सैनिकों को समर्पित एक संस्था 'मातृभूमि सेवा संगठन, पैरी' की स्थापना की गई। यह पंजीकृत संस्था है। इस संस्था के संयोजन में 2018 में इन सैनिकों की बहादुरी को सलाम करते हुए 'गौरव गाथा' पत्रिका प्रकाशित की गई, जिसमें इन जवानों का सचित्र जीवन-परिचय छापा गया। यहाँ के दो सैनिक आतंकियों से लड़ते-लड़ते शहीद हो गए थे। भेज्जी इंजोरम जिला कोंटा बस्तर में नक्सलियों के बारूदी सुरंग विस्फोट में 26 अगस्त, 1991 को गाँव के 41 वर्षीय फ़ौजी जवान श्री तिवर सिंह साहू वीरगति को प्राप्त हो गए। उनकी शहादत से प्रेरित होकर उनके दोनों पुत्र, एक भाई और एक भतीजे ने भी सेना में भर्ती होकर देश की रक्षा का मार्ग चुना।

श्री दिनेश कुमार ठाकुर सीमा-सुरक्षा-बल कश्मीर में ड्यूटी करते 2 मार्च, 2019 को 32 वर्ष की उम्र में शहीद हो गए। उनकी पत्नी और भाई ने अपने आँसू पोंछ उनकी शहादत को नमन करते हुए इसी मार्ग को चुना।

सभी जवानों की अपनी-अपनी कहानी है। पैरी का प्रथम सैनिक ओमप्रकाश रक्षा सेवा में जाने वाले जवानों के लिए प्रेरणा-स्रोत बना। वह राष्ट्रपति पदक से सम्मानित है। एक बहादुर जवान खिलावन यादव ने 15 वर्षों तक नक्सल ऑपरेशन के लिए जवानों को ट्रेनिंग दी। कोई वर्दी पहन कर सपना साकार करने की बातें करता है, तो कोई गोली-बारी के बीच अपने मोर्चे पर डटे रहने की बातें बताता है। मोहित साहू को साउथ सूडान में ड्यूटी करने का अवसर मिला। घुड़सवारी में रमेश और पैराशूट रेजीमेंट में सोमेश्वर ने गाँव का नाम रौशन किया। इन सैनिकों में राष्ट्रसेवा को जीवन का अनमोल क्षण मानने वाले भी हैं, तो जम्मू-कश्मीर की दुर्गम बर्फ़ीली पहाड़ियों में ड्यूटी देने वाले भी, सुदूर नक्सली क्षेत्र के बीहड़ जंगल व कंटक भरे मार्ग भी इनके हौसले को परास्त न कर सके।

इन्हें नमन है।

मुझे बढ़ने दो



एक चिड़िया कहीं से एक बीज अपनी चोंच में लेकर आई और एक पत्थर पर रखकर उसे खाने लगी।

चोंच के प्रहार से बीज छिटक कर मिट्टी में गिर गया।

एक दिन ज़ोर का पानी गिरा।

ज़मीन पर छोटा-सा पौधा उग आया।

एक गिलहरी पौधे को खाने के लिए आई।

पौधे ने कहा,

“गिलहरी रानी! अभी मैं बहुत छोटा हूँ, ज़रा और बढ़ जाऊँ; फिर खाना।” और गिलहरी चली गई।

सूर्य का प्रकाश, हवा, पानी पाकर पौधा एक झाड़ी बन गया।

एक दिन एक बकरी झाड़ी को खाने के लिए आई।

झाड़ी ने कहा,

“प्यारी बकरी मुझे मत खाओ; थोड़ा सब्र करो। मैं थोड़ा और बढ़ जाऊँ; फिर खा लेना।” और बकरी चली गई।

झाड़ी बढ़ते-बढ़ते एक छोटा पेड़ बन गई। एक दिन चमेली चाची लकड़ी काटने आई।

पेड़ ने कहा,

“चाची मुझे मत काटो; मुझे और बढ़ने दो।” और चाची चली गई।

वह छोटा पेड़ एक विशाल वृक्ष में बदल गया। उसमें चिड़िया के बच्चों के लिए जगह थी। गिलहरी के खाने के लिए पर्याप्त फल थे। बकरी को पेट भर पत्तियाँ मिलती थीं। चमेली चाची को भी फल-फूल, सूखी टहनियाँ मिल जाती थीं। सब की ज़रूरतें पूरी हो रही थीं और पेड़ भी हरा-भरा था।

तिनका-तिनका जोड़ना पड़ेगा



बहुत पुरानी बात है। समय बीत जाता है लेकिन बातें रह जाती हैं। सभी पक्षी अपने रहने के लिए घोंसले बनाया करते थे, लेकिन कबूतर को यह सब इंझट लगता था। उसे अपने में मस्त रहना पसंद था। कबूतर सभी पक्षियों में सबसे सीधा माना जाता है। वह किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करता एवं अपने काम से काम रखता है। 'न उधो से लेना न माधो को देना'। उसमें एक बहुत बड़ी कमी थी। वह बहुत आलसी था। वर्षा, गर्मी सभी मौसम में भीगता-तपता रहता, लेकिन उसने कभी-भी घर बनाने का प्रयास नहीं किया। दूसरे पक्षी उसे बार-बार समझाते- मनाते। वह एक कान से सुनता और दूसरे कान से निकाल देता था। हर बार वह बस यही गाता रहता-

हाय-हाय! तुम क्यों करते हो?
अपनी कोठी क्यों भरते हो?
सुख का जीवन है जीना
चुगकर दाना, पानी पीना
चार दिनों का जीवन है ये
हाय-हाय! कर क्या है पाना।
क्यों तुम हाय-हाय करते हो।
मन में संशय तुम क्यों धरते हो।



बया, गौरैया, टिटहरी, फाख्ता और उल्लू सभी चिड़ियों ने अपने गुणों के आधार पर अपने घोंसले बनाए। कौए को घोंसला बनाना नहीं आता था, उसने ढीला-ढीला घर बनाया। उल्लू ने पेड़ पर बने खोह को अपना घर बनाया, पर कबूतर अब भी इसे झंझट का काम ही समझता था। उसका एक ही भाव रहता – क्यों हाय-हाय करना, चार दिन की ज़िंदगी है, उसे अच्छे से जी लेना चाहिए।

कबूतर के सभी मित्र-पक्षी कहते – “तुम भी अपना घर बना लो। क्यों सर्दी, गर्मी और वर्षा में अपनी जान देने पर तुले हुए हो?”

कबूतर उनसे पूछता – “क्या करना होगा मुझे? उसके मित्र कहते – “बस तिनका-तिनका जोड़ना पड़ेगा।” बस तिनका-तिनका जोड़ना पड़ेगा? मैं आज ही बनाता हूँ, ऐसा कहकर वह फिर भूल जाता फिर कोई मित्र कहता – “तुम अपना घर क्यों नहीं बनाते, तुम्हें दुख-दर्द नहीं होता।” कबूतर फिर से पूछता, “मुझे क्या करना होगा?”

“कुछ नहीं, बस तुम्हें तिनका-तिनका जोड़ना पड़ेगा। तुम्हारा घर बन जाएगा, तुम सुख से रहोगे।” कबूतर ने फिर से वही दोहराया। हाँ, हाँ! बस आज ही बनाऊँगा, तुमने सही बताया। ऐसे कह कर कबूतर फिर शाम तक भूल गया। न जाने कितनी बार सब ने उससे कहा और वह टालता गया।

सबको यही कहता आज ही बनाऊँगा, और गीत गाता –

खेलो-कूदो मजे उड़ाओ

गीत खुशी के मिलके गाओ।

छोटा-सा तो पेट है भैया

कितना करोगे ता-ता-थैया।

ऐसा कहते-कहते दिन, सप्ताह, महीने और वर्ष बीत गए।

लेकिन कबूतर ने अपना घोंसला नहीं बनाया। जहाँ जगह मिली, वहीं रहने लगा। वह लोगों के घरों की छत पर या कहीं बँधे मटके में रहने लगा। दिन बीतते गए। स्वच्छंद घूमने वाला कबूतर अब पालतू बन कर रह गया।

भारतीय वेशभूषा



भारत विभिन्नताओं का देश है। यहाँ पग-पग में भिन्नताएँ हैं। भाषा, बोली, रीति-रिवाज, रूप-रंग, रहन-सहन संस्कृति, प्रकृति, खान-पान वेशभूषा विभिन्न अंचलों में अलग-अलग हैं।

प्राचीन काल से कपास की खेती कर के तथा उसका सूत बनाकर कपड़े बनाए जाते थे। मुख्य रूप से पुरुषों के लिए धोती-कुर्ता तथा बंगाली महिलाओं के लिए साड़ी पहनावे के रूप में सदा प्रचलन में रही। यह बात अलग है कि समयानुसार इसमें भी बीच-बीच में मिश्रण और बदलाव होता गया। विभिन्न जातियाँ आईं और बस गईं। उनके पहनावे को भी अपनाया गया। पाजामा, फूल-पैट, टी-शर्ट, सलवार-कुरती इसी प्रकार हमारे परिधान में शामिल हो गए। इसके बावजूद हमने अपनी पारंपरिक वेशभूषा को अपनाए रखा।



जलवायु के अनुकूल ही वस्त्रों का चयन किया जाता है। मौसम में परिवर्तन होने पर सर्दी, गर्मी, बरसात के अनुकूल वस्त्र पहना जाता है। सर्दी में स्वेटर, जैकेट जैसे - गर्म कपड़े तो गर्मी में हल्के-ढीले-ढाले सूती वस्त्र पहने जाते हैं। हर उम्र के परिधान भी अलग-अलग होते हैं। बच्चों, युवाओं, प्रौढ़ों, बुजुर्गों की अपनी-अपनी पसंद होती है।

भारतीय पोशाकों की विविधता क्षेत्र विशेष की अनूठी पहचान है। इन पोशाकों को अलग-अलग राज्य में अलग-अलग नाम से पुकारा जाता है, जैसे - केरल में धोती को 'मुंडू' कहते हैं, असम में धोती को 'गमोसा'। धोती बिना सिला हुआ कपड़ा है, जिसे कमर के चारों ओर लपेटकर कमर पर बाँधा जाता है। यह ढीला होने के कारण आरामदायक होता है। कुर्ता लंबी शर्ट जैसा होता है और देखने में सुंदर लगता है। पाजामा कमर में कुर्ते के नीचे पहनते हैं। जैकेट एक छोटा कोट होता है, जो कमर तक आता है और दुनिया भर में लोकप्रिय है। राजस्थान, गुजरात में पगड़ी विशेष प्रिय है, तो दक्षिण भारत में धोती को 'लुंगी' के रूप में लपेटकर पहना जाता है।

संपूर्ण भारत में महिलाओं का मुख्य परिधान साड़ी है। क्षेत्र विशेष में साड़ी के अलग-अलग नाम हैं। तमिलनाडु में कांजीवरम, महाराष्ट्र में नौवरी साड़ी, बंगाल में लाल बॉर्डर वाली सफेद साड़ी तांत, जामदानी, बालूचुरी, उड़ीसा में संबलपुरी, खंडूवा, बेरहामपुरी, केरल में नेरियथु कसाउ साड़ी का चलन है। छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, बिहार में महिलाओं का साड़ी, ब्लाउज़, लुगरा, पोलखा प्रमुख परिधान हैं। इसके अलावा बनारसी, रेशमी, सूती, बँधानी, कोसा खादी की साड़ियाँ भी होती हैं। सूती साड़ियाँ अपने हलके और हवादार होने के कारण ज्यादा लोकप्रिय हैं।

पढ़ने दे

चिड़िया आ तू चीं- चीं कर,
दाना खाकर उड़ फर-फर
मेहनत मुझको करने दे,
पढ़ने दे! मुझे पढ़ने दे ।

बस्ता मेरा भारी है
मुझ पर जिम्मेदारी है ।
सफल परिश्रम करने दे,
पढ़ने दे! मुझे पढ़ने दे ।

पढ़-लिख कर विद्वान बनूँ,
जग में अपना नाम करूँ ।
काम मुझे तू करने दे,
पढ़ने दे! मुझे पढ़ने दे ।

देश की सेवा करने दे,
सत्य मार्ग पर बढ़ने दे ।
नाम ये ऊँचा करने दे,
पढ़ने दे! मुझे पढ़ने दे ।



लक्ष्य भेद

कौरव और पांडव राजकुमार साथ-साथ रहते और खेलते थे। उनकी शिक्षा भीष्म पितामह की देख-रेख में होती थी।

एक दिन खेल में राजकुमारों की गेंद एक कुएँ में गिर गई। सभी परेशान हो उठे। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि गेंद कैसे निकालें। इसी समय वहाँ एक ब्राह्मण आए। उनके बाल सफेद थे। मुख पर तेज था। हाथों में धनुष था और पीठ पर तरकस। राजकुमारों की चिंता का कारण समझ कर उन्होंने अपने धनुष पर बाण चढ़ाया और कुएँ में पड़ी गेंद को निशाना बनाया। फिर एक बाण से दूसरे बाण को बेध कर गेंद कुएँ से निकाल दी। सभी राजकुमार खुशी से नाच उठे। उस ब्राह्मण ने कुएँ में अपनी अँगूठी डालकर उसे भी उसी विधि से निकाल दिया। बालकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे उन्हें अपने पितामह भीष्म के पास ले गए। भीष्म उन्हें देखते ही पहचान गए। वे कोई साधारण ब्राह्मण नहीं, बल्कि आचार्य द्रोण थे। भीष्म ने राजकुमारों की शिक्षा उन्हीं के हाथों में सौंप दी।

आचार्य द्रोण महर्षि भरद्वाज के पुत्र थे। उन्होंने पिताजी से वेद-वेदांत और धनुर्विधा की शिक्षा पाई थी। द्रोणाचार्य का एक पुत्र था। उसका नाम था अश्वत्थामा।

द्रोणाचार्य की देख-रेख में राजकुमारों की शिक्षा-दीक्षा होने लगी। एक दिन आचार्य ने शिष्यों को नया पाठ दिया- 'क्रोध नहीं करना चाहिए। सदा सत्य बोलना चाहिए।' दूसरे दिन सभी राजकुमारों ने सही-सही सुना दिया। एक युधिष्ठिर को ही पाठ याद नहीं था। आचार्य जी ने उन्हें डांटते हुए कहा- "सभी बच्चों ने सुना दिया, जरा-सा पाठ, तुम उसे भी याद नहीं कर पाए।"

युधिष्ठिर बिना झुँझलाए के बोले "आचार्य जी! आधा पाठ 'क्रोध नहीं करना चाहिए' तो मुझे याद हो गया है। लेकिन दूसरा आधा 'सदा सत्य बोलना चाहिए'- इस पाठ को यदि मैं अपने जीवन भर में भी सही-सही याद कर सका तो अपने को धन्य मानूँगा।" और युधिष्ठिर सत्य के, आर्ग पर चल पड़े।

राजकुमारों की शिक्षा पूरी हुई। परीक्षा की घड़ी आ गई। गुरु द्रोणाचार्य ने पेड़ की ऊँची टहनी पर चिड़िया का एक पुतला बँधवा दिया। राजकुमारों से उसकी आँख में निशाना लगाने के लिए कहा।

सबसे पहले युधिष्ठिर आए। जब वे निशाना साध कर खड़े हुए तो गुरु द्रोण ने उनसे

पूछा- बेटा युधिष्ठिर, तुम्हें क्या दिखता है?

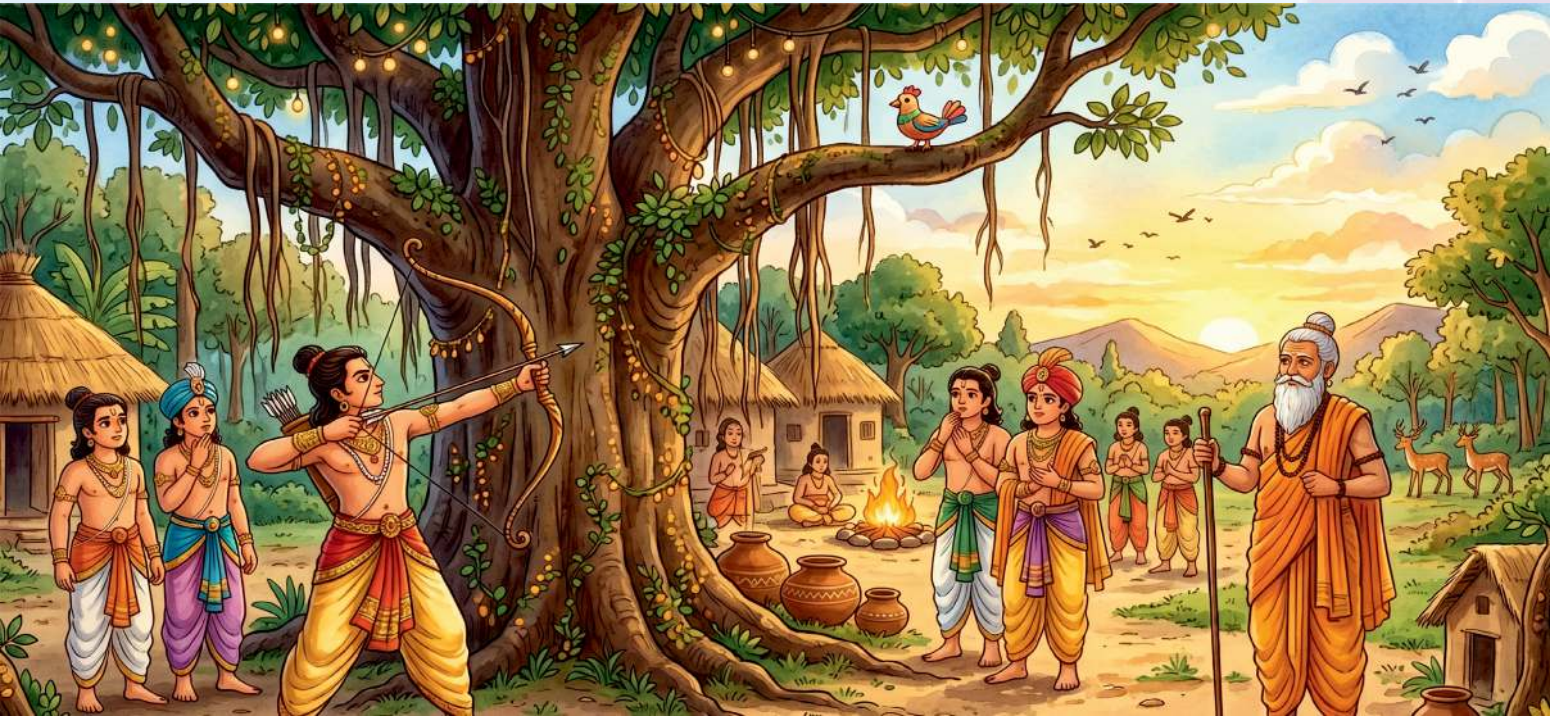
युधिष्ठिर बोले "गुरुदेव! मुझे पेड़ दिख रहा है, तना दिख रहा है, टहनी दिख रही है, चिड़िया दिख रही है और उसकी आँख भी दिख रही है।"

आचार्य द्रोण बोले- "युधिष्ठिर, तुम बाण उतार लो। तुम्हारा निशाना चूक जाएगा।"

इसी तरह द्रोणाचार्य ने निशाना लगाने के लिए बारी-बारी से सभी राजकुमारों को बुलाया। सभी से वही प्रश्न किया "तुम क्या देख रहे हो?" और सभी ने युधिष्ठिर जैसा ही उत्तर दिया। अंत में अर्जुन की बारी आई। गुरुदेव ने अर्जुन से भी वही प्रश्न किया। लक्ष्य पर बाण साधे अर्जुन बोला- "गुरुदेव! मुझे तो केवल चिड़िया की आँख ही दिखाई पड़ रही है और कुछ नहीं दीखता।"

आचार्य द्रोण खुश हो गए। बोले- "बहुत अच्छा! निशाना लगा दो।"

अर्जुन के धनुष से बाण छूटा। दूसरे ही क्षण चिड़िया धरती पर आ गिरी। आचार्य ने राजकुमारों को सीख देते हुए कहा- "बच्चों, यदि सच्चा निशाना लगाना हो तो केवल लक्ष्य पर ही दृष्टि जमाओ। ध्यान केवल वहीं रखना चाहिए, जिसे तुम करना चाहते हो। तभी सफलता मिलेगी।"



पोला

छत्तीसगढ़ में पोला त्योहार मूलतः खेती-किसानी से जुड़ा है। यह त्योहार किसानों के सच्चे साथी बैलों की पूजा को समर्पित है। इस पर्व को भादों माह के अमावस्या को मनाया जाता है। मान्यता है कि इसी दिन धरतीमाता गर्भ धारण करती है, इसे 'गर्भाही तिहार' कहा जाता है, अर्थात् धान के पौधों में इसी दिन दूध भरता है, इसलिए पोला के दिन किसान धान के लिए सधौरी के रूप में गुरहा चीला खेत ले जाते हैं और धान के पौधों को भेंट करते हैं।

इस दिन पशुधन की पूजा होती है। गाँव का मुख्य व्यवसाय कृषि है। बैल कृषि कार्य करने का प्रमुख साधन रहा है। इसलिए उसके प्रति श्रद्धा व आभार प्रकट करते हैं। नंदी (बैल) शिव जी का वाहन है, जिसका सम्मान करते हुए उसके स्वरूप में मिट्टी के बैलों को सजाकर उनकी पूजा की जाती है। बच्चे कुम्हार द्वारा बनाए नादिया बैलों को सजा-सँवारकर रस्सी बाँधकर उन्हें खींचते हैं और साथियों के साथ दौड़ाते हुए खेलते हैं।

लड़कियाँ मिट्टी के जाँता से रेत, धूल को अनाज मानकर पीसते हुए खेलती हैं। पूर्वजों द्वारा बच्चों को कृषि कार्य और घर-गृहस्थी के कामकाज सीखने का यह बढ़िया तरीका अपनाया गया है।



पोला त्योहार के दिन बैलों को सजाकर, गले में घुँघरू व घाँघरा बाँधकर बड़े पैमाने पर गाँव के दइहान या मैदान में बैल-दौड़ प्रतियोगिता होती है। विजेता बैल और उसके मालिक किसान का सम्मान किया जाता है। प्रतियोगिता को देखने पूरे गाँव के व आस-पास के गाँव के लोग इकट्ठा होते हैं।

गाँव के बच्चे, युवा, खो-खो, कबड्डी, फुगड़ी, रस्साखींच, नारियल फेंक प्रतियोगिता आदि खेल खेलते हैं। गाँव की महिलाएँ विविध गीत-नृत्य के माध्यम से अपने उत्साह को प्रकट करती हैं, जिसे देखने के लिए हजारों लोग जुड़ते हैं और पशुधन के महत्व, योगदान और सम्मान की परंपरा से परिचित होते हैं।

पोला के दिन हर घर में चीला, ठेठरी, खुरमी, बरा, सोहारी, भजिया और अन्य पकवान बनाए जाते हैं। इन पकवानों को मिट्टी के बर्तन, पोला-जाँता या मिट्टी के खिलौनों को भेंट करते हैं और उनकी पूजा करते हैं। इसके पीछे मान्यता है कि घर के बर्तन हमेशा अन्न से भरे रहें। बच्चों को मिट्टी के बैल के साथ ही मिट्टी के ढेर सारे खिलौने मिलते हैं। बच्चे अपने संगी-साथियों के साथ खिलौनों से खेलते और त्योहार को खुशी से मनाते हैं।



ठाकुर प्यारे लाल



ठाकुर प्यारेलाल सिंह

अपना सब कुछ समर्पित कर जीवन के प्रत्येक पल को समाज व देश के निर्माण में लगा देने वाले त्यागी व्यक्ति बहुत कम होते हैं। ठाकुर प्यारे लाल सिंह जी इसी तरह के त्यागवीर थे, जिन्होंने छत्तीसगढ़ के साथ ही पूरे देश के कल्याण के लिए सर्वस्व बलिदान कर दिया इसलिए उन्हें जीवन काल में ही 'त्यागमूर्ति' कहा जाने लगा था।

श्रमिक आंदोलन के सूत्रधार, भूदान-क्रांति के सिपाही ठाकुर प्यारे लाल सिंह का जन्म 21 दिसंबर, 1891 को राजनाँदगाँव ज़िले के दैहान गाँव के ठाकुर दीनदयाल सिंह के घर में हुआ था। इनके पिताजी संपन्न और पढ़े-लिखे व शिक्षा विभाग में एक अधिकारी थे। ठाकुर प्यारे लाल की माता जी का नाम श्रीमती नर्मदा देवी था। ठाकुर प्यारे लाल सिंह का विवाह 16 वर्ष की आयु में रायपुर निवासी ठाकुर भगवान सिंह की सुपुत्री गोमती देवी के साथ हुआ।

रायपुर के सरकारी हाईस्कूल से उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की और नागपुर के हिस्लॉप कॉलेज से इंटरमीडिएट किया। पिताजी के आकस्मिक निधन हो जाने के बाद सबसे पड़े पुत्र होने के नाते घर की सारी ज़िम्मेदारी उनके ऊपर आ गई, लेकिन आगे पढ़ने की इच्छा बनी रही। ठाकुर परिवार के हितैषी पंडित नारायण प्रसाद जी की प्रेरणा व आर्थिक सहयोग से उन्होंने 1916 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी. ए. व वकालत की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। वे हॉकी, फुटबॉल और टेनिस के अच्छे खिलाड़ी रहे।

पंडित माधव राव सप्रे के स्वदेशी आंदोलन में वे 'छत्तीसगढ़ मित्र' पत्रिका से जुड़ गए और 1906 से स्वदेशी वस्त्रों के प्रचार में जुट गए। उसी दौरान बंगाल के क्रांतिकारियों से उनका संपर्क हुआ और क्रांतिकारी साहित्य का प्रचार-प्रसार करने लगे। वे विद्यार्थियों को संगठित कर जुलूस



निकालते और 'वंदेमातरम्' का उदघोष करते थे। 1909 में 'सरस्वती पुस्तकालय' की स्थापना करके वे क्रांतिकारी साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने में जुट गए।

1920 में राजनाँदगाँव के मिल मज़दूरों ने उनके नेतृत्व में मिल मालिकों के विरुद्ध आंदोलन किया, जिसमें मिल मज़दूरों की जीत हुई। देश में श्रमिकों का यह पहला आंदोलन था। दिसंबर 1920 में वे महात्मा गाँधी जी की अपील पर असहयोग आंदोलन में कूद गए और वकालत छोड़ दी। 1925 में वे रायपुर में बस गए और शराब दुकानों पर धरना देना, हिंदू-मुस्लिम एकता, दलित उत्थान, नमक क़ानून तोड़ना, जैसे अनेक कार्य करते हुए कई बार जेल गए। उनके मनोबल को तोड़ने के लिए शासन द्वारा कुर्की भी की गई, लेकिन वे अडिग रहे।

1937 में वे रायपुर नगरपालिका के अध्यक्ष चुने गए। उन्होंने क़र्ज़ में डूबी नगरपालिका को क़र्ज़ से उबारकर आर्थिक रूप से मजबूती प्रदान की। प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में सहयोग के लिए उनकी अध्यक्षता में 'छत्तीसगढ़ एजुकेशन सोसायटी' की स्थापना की गई। 1945 में बुनकर सहकारी संघ की स्थापना में उनकी मुख्य भूमिका रही। प्रवासी छत्तीसगढ़ियों को शोषण व अत्याचार से मुक्त कराने में वे हमेशा सक्रिय रहे।

1952 में वे रायपुर के विधायक बन गए और विरोधी दल के नेता चुने गए। विनोबा भावे जी के भूदान आंदोलन और सर्वोदय आंदोलन से प्रभावित होकर उनके साथ जुड़ गए और पूरे छत्तीसगढ़ में विस्तार करने लगे। भूदान यात्रा के दौरान वे अस्वस्थ हो गए और 20 अक्टूबर, 1945 को वे स्वर्ग सिधार गए। छत्तीसगढ़ व देश ने एक सच्चा सपूत खो दिया।

उनके महान त्याग और बलिदान का सम्मान करते हुए छत्तीसगढ़ शासन द्वारा 'ठाकुर प्यारे लाल सम्मान' स्थापित किया गया है, जो सहकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले को प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है।

हँसते-हँसते चलना राही

हँसते - हँसते चलना राही,
थकना, पर न अटकना राही ।

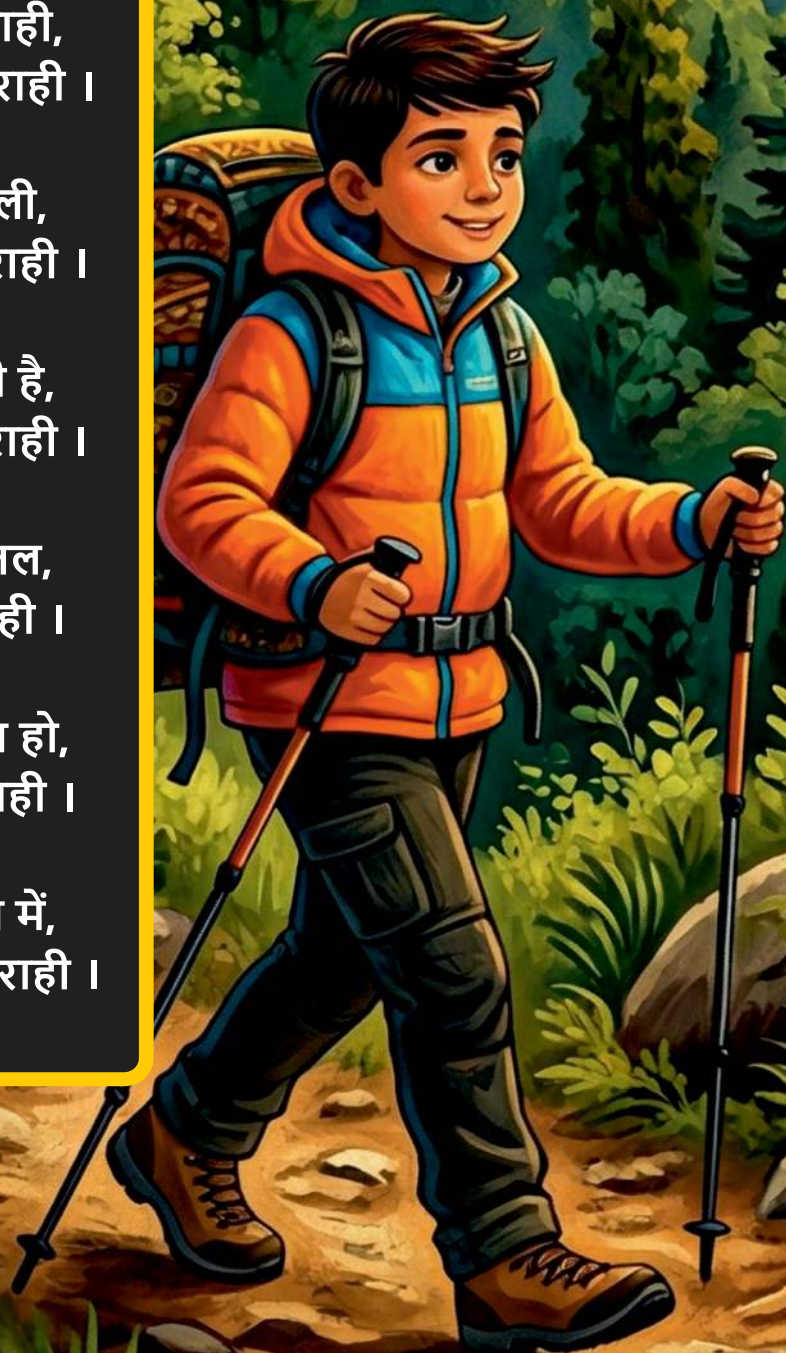
राह बहुत लंबी रपटीली,
बिल्कुल नहीं भटकना राही ।

धूप - धूप में चलना ही है,
छाँव न कभी पकड़ना राही ।

एक नहीं होती है मंज़िल,
हर पल आगे बढ़ना राही ।

पर्वत- घाटी या समतल हो,
कभी न राह बदलना राही ।

सुविधाओं के घटाटोप में,
कभी न खुद को छलना राही ।



लोकवाद्य : मोहरी



मोहरी छत्तीसगढ़ का एक प्रसिद्ध लोकवाद्य है। इसकी सुरीली तान मानो कानों में रस घोल देती है। इस वाद्य यंत्र की लंबाई लगभग एक फुट होती है। बनावट की दृष्टि से इसे तीन भागों में बाँटा जा सकता है- फेर, डाँड़ी और साँसी। मोहरी के आगे वाले भाग को 'फेर' कहते हैं। पहले यह सूखी लकड़ी से बनाया जाता था। कालांतर में लकड़ी के स्थान पर काँसा, पीतल अथवा स्टील धातु का प्रयोग किया जाने लगा। मोहरी का मध्य का भाग 'डाँड़ी' कहलाता है। फेर को 'डाँड़ी' में

कसा जाता है। 'डाँड़ी' बाँस की बनी होती है। बाँसुरी की तरह मोहरी के इस भाग में छिद्र बने होते हैं। इनकी संख्या सात से आठ तक होती है। वादक कलाकार इन छिद्रों में अपनी उँगलियाँ चलाकर सुर को नियंत्रित करते हैं।

डाँड़ी के अंतिम सिरे पर पीतल से बनी 'साँसी' जुड़ी होती है। साँसी में ताड़ की सूखी पत्ती को काटकर लगाया जाता है। मोहरी के इस भाग में एक पतली गोलाकार 'फिलफिली' भी लगाई जाती है। यह नारियल के भीतर के आवरण वाले भाग (खोटली) को काटकर बनाई जाती है। मोहरी को बजाने से पहले 'साँसी' में लगी ताड़ की पत्तियों को गीला किया जाता है। इन्हीं पत्तियों के कारण मोहरी से कर्णप्रिय ध्वनि निकलती है।

मोहरी की आवाज सचमुच सुननेवालों का मन मोह लेती है। इस



श्री पंचराम देवांगन

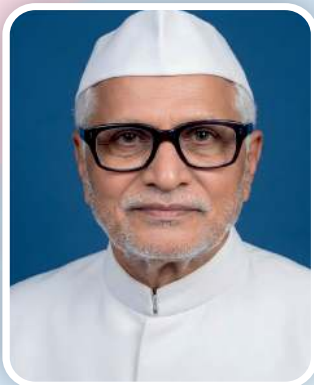
लिहाज से यह अपने नाम को सार्थकता प्रदान करती है। यह वाद्य मांगलिक अवसरों पर दमउ, दपड़ा, निशान आदि छत्तीसगढ़ के पारंपरिक वाद्यों के साथ बजाया जाता है।

इस पारंपरिक वाद्ययंत्र को बजाने वालों में राजनांदगाँव ज़िले के श्री पंचराम देवदास का नाम उल्लेखनीय है। इस कला में उन्हें महारत हासिल है। आठ छिद्रोंवाली मोहरी उन्हीं की देन है। राज्योत्सव से लेकर आकाशवाणी और दूरदर्शन सहित अनेक लोककला मंचों पर उन्होंने कुशलता के साथ मोहरी-वादन प्रस्तुत किया है। आज इस कला और इसके वादक कलाकारों को संरक्षण एवं प्रोत्साहन प्रदान करने की आवश्यकता है।



छत्तीसगढ़ के प्रमुख पारंपरिक वाद्ययंत्र

स्वतंत्रता-संग्राम-सेनानी- हीरालाल सोनबोइर



श्री हीरालाल सोनबोईर

बालोद ज़िले की डौंडीलोहारा तहसील में एक गाँव है भरदा। यहाँ के एक दंपति घनाराम और श्रीमती ग्वालिन बाई साहू के घर 1 जनवरी, 1907 को एक बालक का जन्म हुआ। बालक अत्यंत रूपवान था। पड़ोसियों द्वारा कहा जाने लगा, "तुम्हारा बेटा हीरे के समान चमक रहा है।" यह उक्ति मानो उसके नामकरण का संकेत था। माता-पिता द्वारा बालक का नाम हीरालाल रखा गया।

बालक पढ़ने-लिखने में होशियार था। उन्होंने चौथी की परीक्षा 1920 में पास की तथा मिडिल की शिक्षा अर्जुदा स्कूल से उत्तीर्ण कर दो-वर्षीय शिक्षक-प्रशिक्षण के लिए नॉर्मल स्कूल रायपुर चला गया। शिक्षक के रूप में उनकी प्रथम नियुक्ति प्राथमिक शाला सोरर में हुई।

हीरालाल के कार्य-व्यवहार को देखते हुए उनका चयन बेसिक ट्रेनिंग नॉर्मल स्कूल सिवनी के लिए किया गया। यहाँ पद-भार ग्रहण करने के बाद उन्होंने हीरालाल के आगे उपनाम 'सोनबोइर' लिखना शुरू किया। वास्तव में सोनबोईर उनका गोत्र-नाम है। प्रशिक्षण-अवधि में उन्होंने महात्मा गाँधी के विचारों से प्रेरित होकर चरखा चलाना व कताई-बुनाई करना सीखा।

बेसिक ट्रेनिंग के बाद उनकी नियुक्ति प्राथमिक शाला पैरी में प्रधान पाठक के रूप में हुई। एक वर्ष पश्चात् 1942 में उनका स्थानांतरण प्राथमिक शाला रनचिरई में हो गया। लेकिन कार्यभार लेने से पहले ही राजनैतिक आंदोलन में भाग लेने का आरोप लगाते हुए उन्हें अँग्रेज़ सरकार ने बर्खास्त करने का आदेश जारी कर दिया और उन्हें जेल जाना पड़ा।

महात्मा गाँधी वर्ष 1933 में दुर्ग आए। हीरालाल ने दुर्ग आकर उनके दर्शन किए। गाँधी जी के रायपुर के कार्यक्रम में भी वे शामिल हुए। हीरालाल



सोनबोइर नियमित डायरी लेखन करते थे। उन्होंने अपनी डायरी में लिखा है, "यदि उस दिन दुर्ग नहीं जाता, तो इस सदी में जन्म लेकर भी बापू के दर्शन से वंचित रह जाता।"

उन दिनों गाँवों, कस्बों व शहरों में आज़ादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी। वे जन-जागरण हेतु कई गाँवों का भ्रमण करते थे। जुलूस के दौरान अँग्रेज़ी सत्ता के खिलाफ़ आज़ादी के नारे लगाते थे। आज़ादी की लड़ाई में शामिल होने के लिए गाँव वालों से आह्वान करते थे। हीरालाल जी ने अपने सेनानी साथी उमैद सिंह कलिहारी और छोटेलाल के साथ 1930 में अर्जुदा में खादी पहनने का संकल्प लिया और वे जीवन भर खादी-वस्त्र ही पहनते रहे।

शिक्षकीय सेवा में रहते हुए वे डाकखाने का काम भी देखते थे। अँग्रेज़ों के खिलाफ़ पर्चे को डाक के डिब्बे में छिपाकर रखते और उसे बाँटते थे। ये पर्चे लोगों को उद्वेलित करने वाले होते थे। जब अँग्रेज़ अफ़सरों को भनक लगी, तब उनके खिलाफ़ जाँच करने के लिए सी.आई.डी. हवलदार को भेजा गया। पर्याप्त प्रमाण मिलने पर उसे बर्खास्त कर जेल में डाल दिया गया।

1947 में आज़ादी मिलने पर उनकी नियुक्ति मिडिल स्कूल देवरी डौंडीलोहारा में हुई। 1961 में लिखित परीक्षा और इंटरव्यू के माध्यम से राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए उनका चयन हुआ। वे तत्कालीन उपराष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन के हाथों सम्मानित हुए। पुरस्कार लेकर आने पर ग्रामवासियों द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया। वे इसे जीवन का अविस्मरणीय क्षण मानते हैं। 60 वर्ष की उम्र में 1967 में बालोद विधानसभा के विधायक बने। वे चार बार विधायक बने।

उनका पूरा जीवन संघर्षपूर्ण रहा। उन्होंने 90 वर्ष की उम्र में 16 अप्रैल, 1997 को अंतिम साँस ली। पूरे राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया।

कोयल रानी

देखो, कोयल काली-काली,
कूक रही है डाली-डाली।

तन की काली, मन की उजली,
गीत वसंती गाने निकली।

पत्तों में वह छिपकर गाती,
कुहू-कुहू की तान सुनाती।

कहीं बैठकर, किसी पेड़ पर,
मधुर स्वरों की तान छेड़कर।

खेतों का सूनापन हरती,
जंगल को गुंजारित करती।

कोयल रानी, जब गाती है,
मीठे बोल सिखा जाती है।



हार न मानना ही ज़िंदगी है



श्री मुरलीधर देविदास आमटे

बाबा आमटे (मुरलीधर देविदास आमटे) भारत के एक महान समाजसेवी, कुष्ठ रोगियों के मसीहा और आधुनिक गांधी के रूप में प्रसिद्ध थे। बाबा आमटे की माँ ज़्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थीं, लेकिन बहुत बुद्धिमान थीं। वे बहुत-सी बातों को सुंदर ढंग से समझाती थीं। एक बार उन्होंने बाबा आमटे को एक जापानी गुड़िया दी। वह गुड़िया जितनी बार गिरती थी, उतनी बार उठ खड़ी होती थी। उन्होंने अपने पुत्र को देकर समझाया, “बेटा! इस गुड़िया को तुम गिराते-गिराते थक जाओगे, लेकिन यह हर बार उठ खड़ी होगी। इसी तरह जीवन में यदि तुम बार-बार गिरो, तो गिरने या हारने में शर्माना नहीं है, क्योंकि जीवन में हमेशा ही सफलता हाथ नहीं आती। बल्कि गिरकर तुरंत उठ खड़े होने में ही शान है। हार में भी हार न मानना ज़िंदगी का दूसरा नाम है।”

इस बात को बाबा आमटे ने अच्छी तरह गाँठ बाँध लिया था। सख्त बीमारी के बावजूद उन्होंने कुष्ठ रोगियों के लिए आश्रम चलाया। उनके इस समर्पण के लिए आज भी बाबा आमटे को याद किया जाता है।

